
खण्ड 2:

हमारे लिए परमेश्वर का संदर्भ

यदि परमेश्वर इतना छोटा है कि उसे समझा जा सकता है,
तो वह इतना बड़ा भी नहीं है कि हम उसकी आराधना करें।

यदि हम किसी बड़ी तस्वीर से जिसे हम “वास्तविकता” का नाम देते हैं अर्थ निकालना चाहते हैं, तो हमें उसकी हर बात की व्याख्या करनी पड़ेगी। हम वहीं से आरम्भ कर सकते हैं जहां से हमने पहले खण्ड में समाप्त किया था। वहां हमने परमेश्वर के महत्व की खोज की थी, जो हर जगह है, सब कुछ जानता है, और सबसे शक्तिशाली है। ये सब परमेश्वर अर्थात् आत्मा के सार के मूल तत्व हैं।

हमने परमेश्वर के स्वभाव से मिलने वाले कुछ परिणामों पर भी संक्षेप में बात की है। अब हम इसी विचार को लेकर कुछ अधिक विस्तार से बात करेंगे। ऐसा होना भी चाहिए; वरना, हम परमेश्वर को इसी प्रकार का परोपकारी, दूर की, निराकार “शक्ति” समझने लगेंगे। निश्चय ही सबसे बुद्धिमान परमेश्वर इस समस्या से अवगत था और उसने अपने बारे में हमें और ज्ञान देने के लिए कार्य किया। जो कार्य उसने किया वह इस खण्ड के शीर्षक “हमारे लिए परमेश्वर का संदर्भ” के दायरे में आता है।

अपने लिए परमेश्वर के संदर्भ की बात करते हुए हम इस बात में नहीं उलझते कि वह अस्तित्व में कैसे आया। उसका अस्तित्व तो सदा से है। बल्कि, हम इस बात से संघर्ष करते हैं कि हर एक वस्तु जिसमें हम भी शामिल हैं, कैसे और क्यों अस्तित्व में आई। हम ऐसे क्यों हैं? हमारा संसार ऐसा क्यों है?

इन प्रश्नों के उत्तर हमारी सहायता कैसे करते हैं? हमें आज के आगे की ही चिन्ता क्यों

होनी चाहिए? इस सब में परमेश्वर की “दिलचस्पी” क्या है? हमारे सामने यह चुनौती बड़ा डरावना रूप लिए खड़ी है। परन्तु, यदि हम ऐसे मामलों पर चिन्ता करने से इन्कार करते हैं, तो हम इस संदेह में कि किस मार्ग से जाएं और यह कहां तक “जाता” है, अपने आपको दुविधा से बचाए रखते हैं।

आदि में परमेश्वर ने आकाश और पृथ्वी की सृष्टि की। और पृथ्वी बेडौल और सुनसान पड़ी थी; ... तथा परमेश्वर का आत्मा जल के ऊपर मंडराता था (उत्पत्ति 1:1, 2)।

पूर्व युग में परमेश्वर ने बाप-दादों से थोड़ा-थोड़ा करके और भांति-भांति से भविष्यवक्ताओं के द्वारा बातें करके। ... हम से पुत्र के द्वारा बातें कीं, जिसे उस ने सारी वस्तुओं का वारिस ठहराया और उसी के द्वारा उसने सारी सृष्टि रची है (इब्रानियों 1:1, 2)।

आदि में वचन था, और वचन परमेश्वर के साथ था, और वचन परमेश्वर था। यही आदि में परमेश्वर के साथ था। सब कुछ उसी के द्वारा उत्पन्न हुआ ... उसमें जीवन था; और वह जीवन मनुष्यों की ज्योति थी (यूहन्ना 1:1-4)।